दैनिक जागरण
The Indian EXPRESS — JOURNALISM OF COURAGE
दैनिक भास्कर
THE HINDU
जनसत्ता

Result Mitra

Daily CURRENT AFFAIRS
IAS/PCS

अब होगी करंट अफेयर्स की राह आसान

26 April

Quote of the Day

Result Mitra™

हर कठिनाई एक अवसर है,
जो हमें और मजबूत और
सशक्त बनाती है।"

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

UPSC Mains Paper - 2

Result Mitra

DAILY
CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- बीते दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सऊदी अरब की राजकीय यात्रा की और भारत-सऊदी अरब सामरिक साझेदारी परिषद (SPC) की दूसरी बैठक की अध्यक्षता की,

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- गौरतलब है कि भारत और सऊदी अरब के बीच संबंधों ने हाल के दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की है।
- दोनों देशों ने आर्थिक, सामरिक, और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपने सहयोग को गहरा करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- हालांकि पहलगाम में 22 अप्रैल दोपहर करीब 3 बजे हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर सऊदी अरब की ओर से आयोजित आधिकारिक रात्रिभोज में उन्होंने हिस्सा नहीं लिया और अपनी सऊदी अरब की यात्रा को बीच में स्थगित कर भारत लौट आए।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

विगत वर्षों में भारत-सऊदी अरब संबंधों का विकास

ऐतिहासिक संबंधों की नींव

- भारत और सऊदी अरब के बीच संबंध प्राचीन काल से चले आ रहे हैं, जो व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर आधारित थे।
- आधुनिक काल में, 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद दोनों देशों ने औपचारिक राजनयिक संबंध स्थापित किए।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra™

विगत वर्षों में भारत-सऊदी अरब संबंधों का विकास

उच्च-स्तरीय यात्राओं का महत्व

- हाल के वर्षों में, दोनों देशों के नेताओं की उच्च-स्तरीय यात्राओं ने संबंधों को नई गति दी है।
- 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सऊदी अरब यात्रा और 2019 में सऊदी युवराज मोहम्मद बिन सलमान की भारत यात्रा ने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत किया।

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

विगत वर्षों में भारत-सऊदी अरब संबंधों का विकास

उच्च-स्तरीय यात्राओं का महत्व

- इन यात्राओं के दौरान कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, जिनमें रक्षा, ऊर्जा, और निवेश क्षेत्र शामिल थे।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

विगत वर्षों में भारत-सऊदी अरब संबंधों का विकास

रणनीतिक भागीदारी की स्थापना

- 2010 में रियाद घोषणा ने भारत और सऊदी अरब के बीच रणनीतिक भागीदारी की नींव रखी।
- इसके बाद, दोनों देशों ने आतंकवाद, समुद्री सुरक्षा, और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे मुद्दों पर सहयोग बढ़ाया।

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

विगत वर्षों में भारत-सऊदी अरब संबंधों का विकास

आर्थिक संबंधों का विस्तार

- सऊदी अरब भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया है, और दोनों देशों के बीच व्यापार 2022-23 में लगभग 52 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया।
- सऊदी अरब ने भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को भी बढ़ावा दिया है।

2022-23 FY

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

विगत वर्षों में भारत-सऊदी अरब संबंधों का विकास

वैश्विक मंचों पर सहयोग

- भारत और सऊदी अरब ने जी20, संयुक्त राष्ट्र, और अन्य बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग किया है।
- सऊदी अरब ने भारत की स्थायी सदस्यता के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में समर्थन व्यक्त किया है।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब द्विपक्षीय सहभागिता के प्रमुख परिणाम

आर्थिक सहयोग में वृद्धि

- सऊदी अरब भारत का एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है।
- दोनों देशों के बीच व्यापार मुख्य रूप से ऊर्जा क्षेत्र पर आधारित है, क्योंकि सऊदी अरब भारत का दूसरा सबसे बड़ा कच्चा तेल आपूर्तिकर्ता है।
- इसके अलावा, सऊदी अरब ने भारत में पेट्रोकेमिकल और रिफाइनरी परियोजनाओं में बड़े पैमाने पर निवेश किया है, जैसे कि रत्नागिरी रिफाइनरी परियोजना।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब द्विपक्षीय सहभागिता के प्रमुख परिणाम

रणनीतिक भागीदारी का विकास

- 2010 में रियाद घोषणा के बाद दोनों देशों ने अपनी रणनीतिक भागीदारी को मजबूत किया।
- यह भागीदारी आतंकवाद के खिलाफ सहयोग, रक्षा सहयोग, और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए संयुक्त प्रयासों पर केंद्रित है।

DAILY

CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब द्विपक्षीय सहभागिता के प्रमुख परिणाम

रणनीतिक भागीदारी का विकास

- दोनों देशों ने खुफिया जानकारी साझा करने और सैन्य प्रशिक्षण में भी प्रगति की है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब द्विपक्षीय सहभागिता के प्रमुख परिणाम

सांस्कृतिक और जन-जन संपर्क

- सऊदी अरब में लगभग 2.6 मिलियन भारतीय प्रवासी रहते हैं, जो दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक सेतु का काम करते हैं।
- हज यात्रा के लिए सऊदी अरब जाने वाले भारतीय मुस्लिम तीर्थयात्रियों की संख्या भी महत्वपूर्ण है, जो धार्मिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देती है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब द्विपक्षीय सहभागिता के प्रमुख परिणाम

ऊर्जा सुरक्षा में सहयोग

- सऊदी अरब भारत की ऊर्जा सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- भारत अपनी तेल आवश्यकताओं का एक बड़ा हिस्सा सऊदी अरब से आयात करता है, और दोनों देश नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता परियोजनाओं में भी सहयोग कर रहे हैं।

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब द्विपक्षीय सहभागिता के प्रमुख परिणाम

निवेश और बुनियादी ढांचा विकास

- सऊदी अरब का पब्लिक इन्वेस्टमेंट फंड (PIF) भारत में बुनियादी ढांचा, प्रौद्योगिकी, और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रों में निवेश कर रहा है।
- उदाहरण के लिए, सऊदी अरब ने भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में रुचि दिखाई है।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra™

भारत-सऊदी अरब संबंधों में प्रमुख चुनौतियाँ

भू-राजनीतिक जटिलताएँ

- सऊदी अरब का पाकिस्तान के साथ निकट संबंध भारत के लिए चुनौती पेश करता है, विशेष रूप से कश्मीर मुद्दे पर।
- सऊदी अरब को भारत और पाकिस्तान के बीच तटस्थ रहने की आवश्यकता होती है, जो कभी-कभी भारत के हितों के साथ संरेखित नहीं होता।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब संबंधों में प्रमुख चुनौतियाँ

आर्थिक निर्भरता का जोखिम

- भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए सऊदी अरब पर अत्यधिक निर्भरता आर्थिक जोखिम पैदा करती है।
- वैश्विक तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव और भू-राजनीतिक तनाव भारत की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकते हैं।

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब संबंधों में प्रमुख चुनौतियाँ

प्रवासी श्रमिकों के अधिकार

- सऊदी अरब में भारतीय प्रवासी श्रमिकों के साथ दुर्व्यवहार और खराब कामकाजी परिस्थितियों की शिकायतें समय-समय पर सामने आती हैं।
- इन मुद्दों को हल करना दोनों देशों के लिए एक चुनौती है।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब संबंधों में प्रमुख चुनौतियाँ

सांस्कृतिक और सामाजिक अंतर

- दोनों देशों की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में अंतर कभी-कभी गलतफहमियों को जन्म देता है।
- उदाहरण के लिए, सऊदी अरब की रूढ़िवादी सामाजिक नीतियाँ भारतीय प्रवासियों के लिए अनुकूलन को कठिन बना सकती हैं।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत-सऊदी अरब संबंधों में प्रमुख चुनौतियाँ

क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा

- सऊदी अरब और ईरान के बीच क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा भारत के लिए चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि भारत दोनों देशों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखना चाहता है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत और सऊदी अरब के बीच संबंधों के प्रमुख क्षेत्र

नवीकरणीय ऊर्जा और हरित प्रौद्योगिकी

- सऊदी अरब का विजन 2030 और भारत का नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य दोनों देशों को सौर, पवन, और हाइड्रोजन ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में सहयोग करने का अवसर प्रदान करते हैं।
- दोनों देश संयुक्त अनुसंधान और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत और सऊदी अरब के बीच संबंधों के प्रमुख क्षेत्र

प्रौद्योगिकी और डिजिटल अर्थव्यवस्था

- भारत की मजबूत आईटी और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र सऊदी अरब के लिए आकर्षक है।
- सऊदी अरब भारत के डिजिटल बुनियादी ढांचे और स्मार्ट सिटी परियोजनाओं में निवेश कर सकता है।

भारत और सऊदी अरब के बीच संबंधों के प्रमुख क्षेत्र

रक्षा और सुरक्षा सहयोग

- दोनों देश आतंकवाद और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा सकते हैं।
- संयुक्त सैन्य अभ्यास, रक्षा प्रौद्योगिकी साझा करना, और खुफिया जानकारी का आदान-प्रदान संबंधों को मजबूत करेगा।

DAILY CURRENT AFFAIRS

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत और सऊदी अरब के बीच संबंधों के प्रमुख क्षेत्र

स्वास्थ्य और शिक्षा

- कोविड-19 महामारी के बाद स्वास्थ्य क्षेत्र में सहयोग की आवश्यकता बढ़ी है।
- भारत अपनी फार्मास्यूटिकल विशेषज्ञता और सऊदी अरब अपनी चिकित्सा बुनियादी ढांचे की क्षमता के साथ सहयोग कर सकते हैं।
- इसके अलावा, शिक्षा और कौशल विकास में सहयोग प्रवासी श्रमिकों के लिए लाभकारी होगा।

विचारों से लेकर व्यापार तक अरबों के साथ हमारे संबंध

Result Mitra

भारत और सऊदी अरब के बीच संबंधों के प्रमुख क्षेत्र

सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पर्यटन

- दोनों देश सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों, फिल्म महोत्सवों, और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए काम कर सकते हैं।
- सऊदी अरब का पर्यटन क्षेत्र, जो विजन 2030 का हिस्सा है, भारतीय पर्यटकों के लिए आकर्षक हो सकता है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: भारत और सऊदी अरब के बीच व्यापार घाटे (Trade Deficit) के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) 2023-24 में व्यापार घाटा लगभग 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

(b) व्यापार घाटा मुख्य रूप से कच्चे तेल के आयात के कारण था।

(c) सऊदी अरब की अर्थव्यवस्था विविधीकरण के बावजूद तेल पर निर्भर है।

(d) उपरोक्त सभी

Result Mitra

उत्तर: (d) उपरोक्त सभी

- व्याख्या:
- व्यापार घाटा: 2023-24 में भारत का सऊदी अरब के साथ व्यापार घाटा लगभग 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया।
- मुख्य कारण: यह घाटा मुख्य रूप से कच्चे तेल के आयात के कारण था, जो भारत के आयात का एक बड़ा हिस्सा है।
- सऊदी अर्थव्यवस्था: सऊदी अरब अपनी अर्थव्यवस्था को विविधीकृत करने के लिए विजन 2030 के तहत प्रयास कर रहा है, लेकिन यह अभी भी तेल पर निर्भर है।
- इसलिए, सभी कथन सही हैं।

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

UPSC Mains Paper - 2 & 3

Result Mitra

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

चर्चा में क्यों?

- स्वामित्व योजना, जिसका शुभारंभ 24 अप्रैल, 2020 को राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया, ग्रामीण भारत में संपत्ति स्वामित्व को डिजिटल और कानूनी रूप प्रदान करने की एक क्रांतिकारी पहल है।

Survey of villages and mapping with improvised technology in village Area

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- इस योजना ने 2025 में अपने 5 वर्ष पूरे किए, यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में संपत्ति मालिकों को 'अधिकार पत्र' (संपत्ति कार्ड) प्रदान कर आर्थिक सशक्तीकरण, संपत्ति विवादों में कमी और ग्रामीण नियोजन को बढ़ावा देती है।

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

Result Mitra

स्वामित्व योजना के बारे में

- स्वामित्व (Survey of Villages and Mapping with Improvised Technology in Village Areas) योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय संपत्तियों का ड्रोन-आधारित सर्वेक्षण कर मालिकाना हक प्रदान करना है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

स्वामित्व योजना के बारे में

इसके निम्नलिखित लक्ष्य हैं:

- संपत्ति का डिजिटल रिकॉर्ड: ग्रामीण संपत्तियों का भू-स्थानिक डेटा तैयार कर डिजिटल स्वामित्व रिकॉर्ड बनाना।
- आर्थिक सशक्तीकरण: संपत्ति कार्ड के माध्यम से ग्रामीणों को बैंक ऋण और अन्य वित्तीय सुविधाएँ प्राप्त करने में सक्षम बनाना।

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

Result Mitra

स्वामित्व योजना के बारे में

इसके निम्नलिखित लक्ष्य हैं:

- विवाद समाधान: संपत्ति सीमांकन से स्वामित्व विवादों को कम करना।
- ग्रामीण नियोजन: सटीक मानचित्रण के आधार पर ग्राम-स्तरीय विकास योजनाएँ तैयार करना।
- संपदा कर मूल्यांकन: स्थानीय निकायों को संपदा कर संग्रह में सुधार के लिए डेटा प्रदान करना।

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

Result Mitra

स्वामित्व योजना के बारे में

प्रमुख विशेषताएँ

- ड्रोन प्रौद्योगिकी: नवीनतम ड्रोन और भू-स्थानिक तकनीक का उपयोग कर सटीक सर्वेक्षण।
- संपत्ति कार्ड: विभिन्न राज्यों में इन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है, जैसे उत्तर प्रदेश में 'घरौनी', हरियाणा में 'टाइटल डीड', मध्य प्रदेश में 'अधिकार अभिलेख'।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

Result Mitra

स्वामित्व योजना के बारे में

प्रमुख विशेषताएँ

- कवरेज: 2021-2025 के दौरान देश के लगभग 6.62 लाख गाँवों को कवर करने का लक्ष्य।
- प्रशासन: पंचायती राज मंत्रालय द्वारा कार्यान्वयन, भारतीय सर्वेक्षण विभाग और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के सहयोग से।

DAILY CURRENT AFFAIRS

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

Result Mitra

5 वर्षों की उपलब्धियाँ (2020-2025)

2.19

- ड्रोन सर्वेक्षण: 92% लक्षित गाँवों (लगभग 3.17 लाख गाँव) में ड्रोन सर्वेक्षण पूरा।
- संपत्ति कार्ड वितरण: 2.42 करोड़ से अधिक संपत्ति कार्ड तैयार, जिनमें से 2.19 करोड़ से अधिक वितरित किए गए।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

5 वर्षों की उपलब्धियाँ (2020-2025)

- राज्य-स्तरीय संतृप्तिः त्रिपुरा, गोवा, उत्तराखंड, हरियाणा में योजना पूर्ण रूप से लागू। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ और कई केंद्र शासित प्रदेशों में ड्रोन सर्वेक्षण पूरा।
- हालिया वितरणः 27 दिसंबर, 2024 को प्रधानमंत्री ने 10 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों के 46,000 गाँवों के 50 लाख से अधिक संपत्ति मालिकों को संपत्ति कार्ड वितरित किए।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

स्वामित्व योजना के 5 वर्ष पूरे हुए

Result Mitra

5 वर्षों की उपलब्धियाँ (2020-2025)

- आर्थिक प्रभाव: संपत्ति कार्ड ने ग्रामीणों को ऋण प्राप्त करने में सक्षम बनाया, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिला।

Result Mitra

प्रश्न : निम्नलिखित में से स्वामित्व योजना का प्रमुख उद्देश्य क्या नहीं है?

(a) संपत्ति विवादों का समाधान

(b) ग्रामीण नियोजन को बढ़ावा देना

(c) शहरी क्षेत्रों में संपत्ति सर्वेक्षण

(d) ग्रामीणों को आर्थिक सशक्तीकरण

Result Mitra

उत्तर: (c) शहरी क्षेत्रों में संपत्ति सर्वेक्षण

- व्याख्या:
- स्वामित्व योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में संपत्ति सर्वेक्षण, स्वामित्व प्रदान करना, विवाद समाधान और ग्रामीण नियोजन को बढ़ावा देना है। यह योजना विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के लिए है और शहरी क्षेत्रों को कवर नहीं करती।

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

UPSC Mains Paper 2

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- भारत ने हाल ही में औपचारिक रूप से पाकिस्तान को पत्र लिखकर सिंधु जल संधि को तत्काल प्रभाव से स्थगित रखने के अपने निर्णय की जानकारी दी और कहा कि पाकिस्तान ने संधि की शर्तों का उल्लंघन किया है।

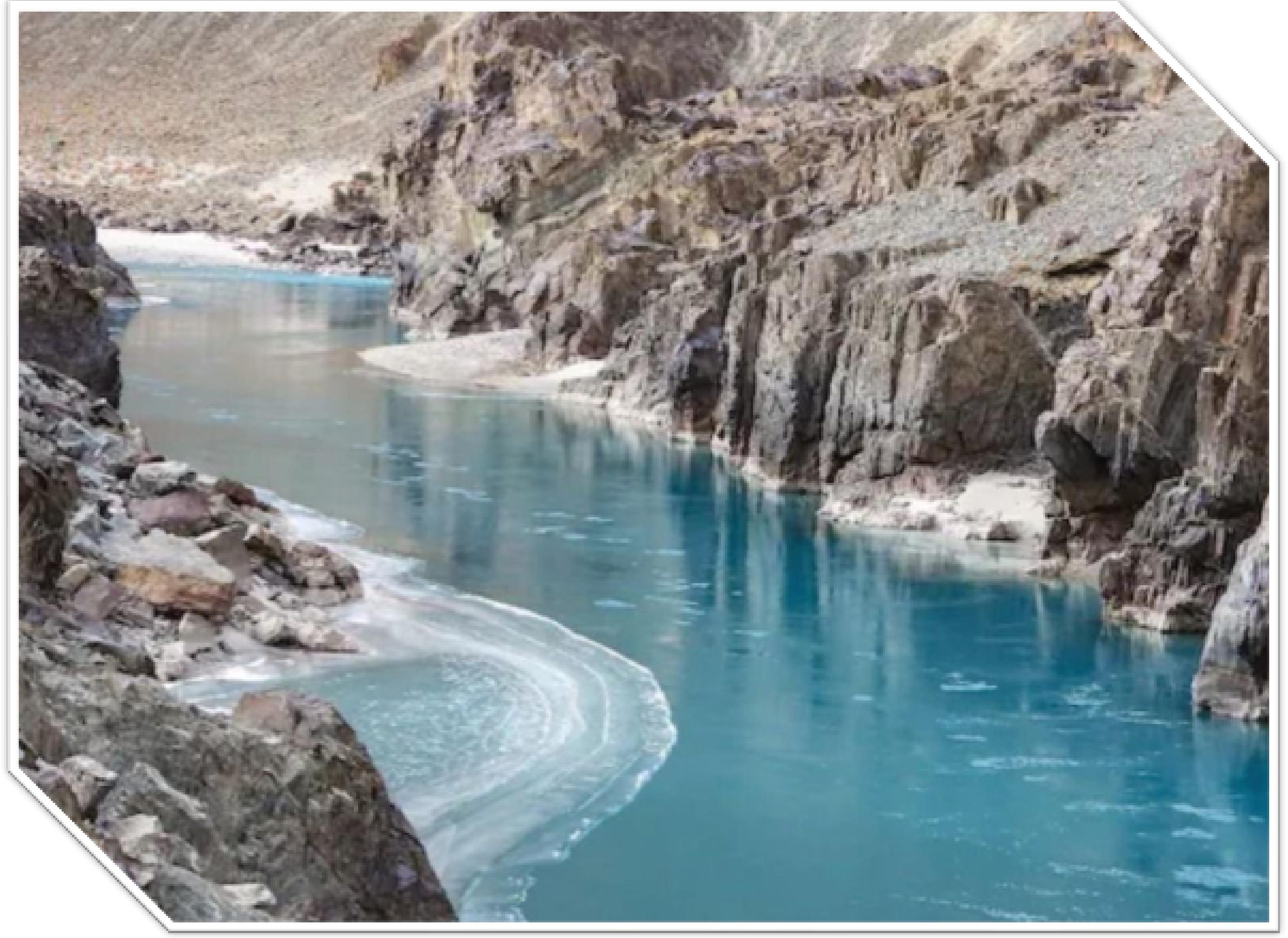

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

चर्चा में क्यों?

- पत्र में लिखा है, "किसी संधि का सद्भावपूर्वक सम्मान करना संधि का मूलभूत आधार है। लेकिन इसके बजाय हमने देखा है कि पाकिस्तान द्वारा भारतीय केंद्र शासित प्रदेश जम्मू कश्मीर को निशाना बनाकर सीमा पार से आतंकवाद जारी है।"

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

सिंधु नदी संधि के प्रमुख प्रावधान

- नदियों का बंटवारा: संधि के तहत, सिंधु नदी प्रणाली की छह नदियों को दो समूहों में बांटा गया है।
- पूर्वी नदियाँ: सतलज, ब्यास, और रावी नदियाँ भारत को आवंटित की गई हैं। भारत इन नदियों के पानी का 100% उपयोग कर सकता है।
- पश्चिमी नदियाँ: सिंधु, चेनाब, और झेलम नदियाँ मुख्य रूप से पाकिस्तान को आवंटित की गई हैं।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

सिंधु नदी संधि के प्रमुख प्रावधान

जल उपयोग का आवंटन:

- संधि के अनुसार, सिंधु नदी प्रणाली के कुल पानी का 80% हिस्सा (लगभग 135 मिलियन एकड़-फीट) पाकिस्तान को और 20% हिस्सा (लगभग 33 मिलियन एकड़-फीट) भारत को दिया गया है।

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

सिंधु नदी संधि के प्रमुख प्रावधान

सीमित उपयोग का अधिकार:

- भारत को पश्चिमी नदियों (चेनाब, झेलम, सिंधु) के पानी का सीमित उपयोग करने की अनुमति है। भारत इन नदियों का उपयोग गैर-उपभोगी कार्यों (जैसे जल विद्युत उत्पादन) और कुछ हद तक सिंचाई के लिए कर सकता है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

सिंधु नदी संधि के प्रमुख प्रावधान

जल भंडारण की सीमा:

- भारत पश्चिमी नदियों पर 3.6 मिलियन एकड़-फीट तक पानी का भंडारण कर सकता है, जिसमें 1.25 मिलियन एकड़-फीट सिंचाई के लिए, 2.35 मिलियन एकड़-फीट जल विद्युत उत्पादन के लिए, और 0.40 मिलियन एकड़-फीट बाढ़ नियंत्रण के लिए है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

सिंधु नदी संधि के प्रमुख प्रावधान

जल विद्युत परियोजनाएँ:

- भारत को पश्चिमी नदियों पर रन-ऑफ-द-रिवर (Run-of-the-River) जल विद्युत परियोजनाएँ बनाने की अनुमति है, लेकिन उसे पानी के प्रवाह को बाधित करने से बचना होगा।

DAILY

CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

संधि की प्रमुख शर्तें

सूचना साझा करना:

- भारत और पाकिस्तान दोनों को नदियों के प्रवाह, बांधों, और परियोजनाओं से संबंधित जानकारी साझा करनी होती है। भारत को पश्चिमी नदियों पर बनने वाली परियोजनाओं की डिज़ाइन और तकनीकी जानकारी पाकिस्तान के साथ साझा करनी होगी।

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि की प्रमुख शर्तें

स्थायी सिंधु आयोग (PIC):

- संधि के तहत एक स्थायी सिंधु आयोग (Permanent Indus Commission) की स्थापना की गई है। इस आयोग में दोनों देशों के एक-एक आयुक्त होते हैं, जो संधि के कार्यान्वयन की निगरानी करते हैं और विवादों को सुलझाने का प्रयास करते हैं।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि की प्रमुख शर्तें

विवाद समाधान तंत्र:

- यदि कोई विवाद उत्पन्न होता है, तो उसे पहले स्थायी सिंधु आयोग के माध्यम से सुलझाने का प्रयास किया जाता है। यदि आयोग विफल रहता है, तो मामले को तटस्थ विशेषज्ञ (Neutral Expert) या मध्यस्थता न्यायालय (Court of Arbitration) के पास भेजा जा सकता है।

DAILY

CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि की प्रमुख शर्तें

- **पानी की निगरानी:** दोनों देशों को नदियों के प्रवाह और उपयोग की निगरानी करनी होती है। इसके लिए नियमित निरीक्षण और डेटा साझा करने की व्यवस्था है।
- **संधि की अवधि:** यह संधि अनिश्चितकाल के लिए है, लेकिन दोनों पक्ष आपसी सहमति से इसे संशोधित या समाप्त कर सकते हैं।

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि की प्रमुख शर्तें

परियोजनाओं पर आपत्ति का अधिकार:

- पाकिस्तान को भारत की पश्चिमी नदियों पर बनने वाली परियोजनाओं पर आपत्ति दर्ज करने का अधिकार है, यदि उसे लगता है कि ये परियोजनाएँ संधि का उल्लंघन करती हैं।

DAILY

CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर प्रभाव

- सिंधु नदी नेटवर्क, जिसमें झेलम, चिनाब, रावी, ब्यास और सतलुज नदियाँ शामिल हैं, पाकिस्तान के प्रमुख जल संसाधन के रूप में कार्य करता है, जो करोड़ों की आबादी का भरण-पोषण करता है।
- यह संधि पाकिस्तान को प्रभावित करेगी, क्योंकि कुल जल प्रवाह का लगभग 80% हिस्सा पाकिस्तान को प्राप्त होता है, जो पाकिस्तान में कृषि के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से पंजाब और सिंध प्रांतों में।

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर प्रभाव

- पाकिस्तान सिंचाई, खेती और पीने के पानी के लिए काफी हद तक इसी जल आपूर्ति पर निर्भर है।
- कृषि क्षेत्र पाकिस्तान की राष्ट्रीय आय में 23% का योगदान देता है तथा इसके 68% ग्रामीण निवासियों का भरण-पोषण करता है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर प्रभाव

- सिंधु बेसिन प्रतिवर्ष 154.3 मिलियन एकड़ फीट पानी की आपूर्ति करता है, जो व्यापक कृषि क्षेत्रों की सिंचाई और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- जल प्रवाह में किसी भी प्रकार की रुकावट से पाकिस्तान के कृषि क्षेत्र पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा, जो उसकी अर्थव्यवस्था और ग्रामीण आजीविका का एक महत्वपूर्ण घटक है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर प्रभाव

- जल की उपलब्धता में कमी से कृषि पर निर्भर ग्रामीण क्षेत्रों में फसल की पैदावार में कमी, खाद्यान्न की कमी और आर्थिक अस्थिरता उत्पन्न होने की संभावना है।
- पाकिस्तान पहले से से ही भूजल की कमी, कृषि भूमि का लवणीकरण और सीमित जल भंडारण क्षमता जैसी गंभीर जल प्रबंधन समस्याओं का सामना कर रहा है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर प्रभाव

- देश की जल भंडारण क्षमता कम है, मंगला और तरबेला जैसे प्रमुख बांधों का संयुक्त जल भंडारण केवल 14.4 एमएएफ है, जो संधि के तहत पाकिस्तान के वार्षिक जल हिस्से का केवल 10% है।
- इस निलंबन से गारंटीकृत अत्ता आपूर्ति में कटौती होने से ये कमजोरियां और बढ़ जाएंगी, जिससे पाकिस्तान के पास अपनी जल आवश्र्ववाताओं के प्रबंचव के त्थिान कम विकल्प बचेंगे।

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से भारत को लाभ

जल संसाधनों का बेहतर उपयोग:

- संधि के निलंबन से भारत को पूर्वी नदियों (सतलज, ब्यास, रावी) के पानी का अधिकतम उपयोग करने का अवसर मिलेगा। भारत अपने हिस्से के 33% पानी को और प्रभावी ढंग से संग्रहित कर सकेगा।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से भारत को लाभ

जल विद्युत परियोजनाओं में तेजी:

- भारत पश्चिमी नदियों (चेनाब, झेलम, सिंधु) पर जल विद्युत परियोजनाओं को तेज कर सकेगा, जो ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करेगा। उदाहरण के लिए, जम्मू-कश्मीर में कई परियोजनाओं को गति मिल सकती है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से भारत को लाभ

- **कृषि उत्पादन में वृद्धि:** अतिरिक्त जल संसाधनों से भारत के पंजाब, हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्यों में सिंचाई क्षमता बढ़ेगी, जिससे फसल उत्पादन में वृद्धि होगी।
- **रणनीतिक लाभ:** जल संसाधनों पर नियंत्रण से भारत को पाकिस्तान के खिलाफ रणनीतिक बढ़त मिलेगी, विशेष रूप से सुरक्षा और कूटनीति के क्षेत्र में।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

संधि के निलंबन से भारत को लाभ

आर्थिक विकास:

- जल और ऊर्जा संसाधनों के बेहतर उपयोग से भारत की अर्थव्यवस्था को बल मिलेगा, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में।

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

अंतरराष्ट्रीय प्रभाव और परिणाम

- **क्षेत्रीय तनाव में वृद्धि:** संधि के निलंबन से भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ सकता है, जो पहले से ही सीमा विवाद और आतंकवाद जैसे मुद्दों से जूझ रहे हैं।
- **विश्व बैंक की भूमिका पर सवाल:** संधि की मध्यस्थता करने वाला विश्व बैंक दबाव में आ सकता है, क्योंकि दोनों देश इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर ले जा सकते हैं।

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

अंतरराष्ट्रीय प्रभाव और परिणाम

- **चीन की भूमिका:** चीन, जो भारत और पाकिस्तान दोनों का पड़ोसी है और सिंधु नदी के ऊपरी क्षेत्रों को नियंत्रित करता है, इस स्थिति का लाभ उठा सकता है। वह पाकिस्तान का समर्थन कर भारत पर दबाव डाल सकता है।
- **अंतरराष्ट्रीय समुदाय की प्रतिक्रिया:** संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक संगठन इस मुद्दे पर हस्तक्षेप कर सकते हैं, क्योंकि जल विवाद क्षेत्रीय स्थिरता को प्रभावित करेगा।

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

अंतरराष्ट्रीय प्रभाव और परिणाम

- **जल कूटनीति पर प्रभाव:** यह कदम जल संसाधनों से संबंधित वैश्विक कूटनीति को प्रभावित करेगा, और अन्य देशों के बीच जल संधियों पर भी असर डाल सकता है।
- **आर्थिक प्रभाव:** क्षेत्रीय अस्थिरता के कारण भारत और पाकिस्तान दोनों के व्यापार और निवेश पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, विशेष रूप से दक्षिण एशिया में।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

पाकिस्तान के पास विकल्प

- **कूटनीतिक प्रयास:** पाकिस्तान इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र और विश्व बैंक जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर ले जा सकता है, ताकि भारत पर संधि को बनाए रखने का दबाव डाला जा सके।
- **जल प्रबंधन में सुधार:** पाकिस्तान को अपने जल संसाधनों का बेहतर प्रबंधन करने का प्रयास कर सकता है, जैसे कि जल संरक्षण, बांधों का निर्माण, और वर्षा जल संग्रहण।

DAILY CURRENT AFFAIRS

सिंधु नदी जल संधि के निलंबन से पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

Result Mitra

पाकिस्तान के पास विकल्प

- **आर्थिक विविधीकरण:** जल और कृषि पर निर्भरता कम करने के लिए पाकिस्तान को अपनी अर्थव्यवस्था को विविध करना होगा, जैसे कि उद्योग और सेवा क्षेत्रों पर ध्यान देना।
- **चीन के साथ सहयोग:** पाकिस्तान चीन के साथ जल और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में सहयोग बढ़ा सकता है, विशेष रूप से CPEC (चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा) के तहत।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: सिंधु नदी जल संधि के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

A) संधि में एकतरफा निकासी का प्रावधान है।

B) संधि में कोई समाप्ति तिथि नहीं है।

C) संधि में संशोधन के लिए विश्व बैंक की सहमति जरूरी है।

D) संधि केवल 50 वर्षों के लिए थी।

Exit clause

Result Mitra

उत्तर: B)

- संधि में कोई समाप्ति तिथि नहीं है।
- व्याख्या:
- संधि अनिश्चितकाल के लिए है, और इसमें कोई "एग्जिट क्लॉज" या समाप्ति तिथि नहीं है।

कुमार मंगलम बिरला को लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025

UPSC Mains Paper - 1

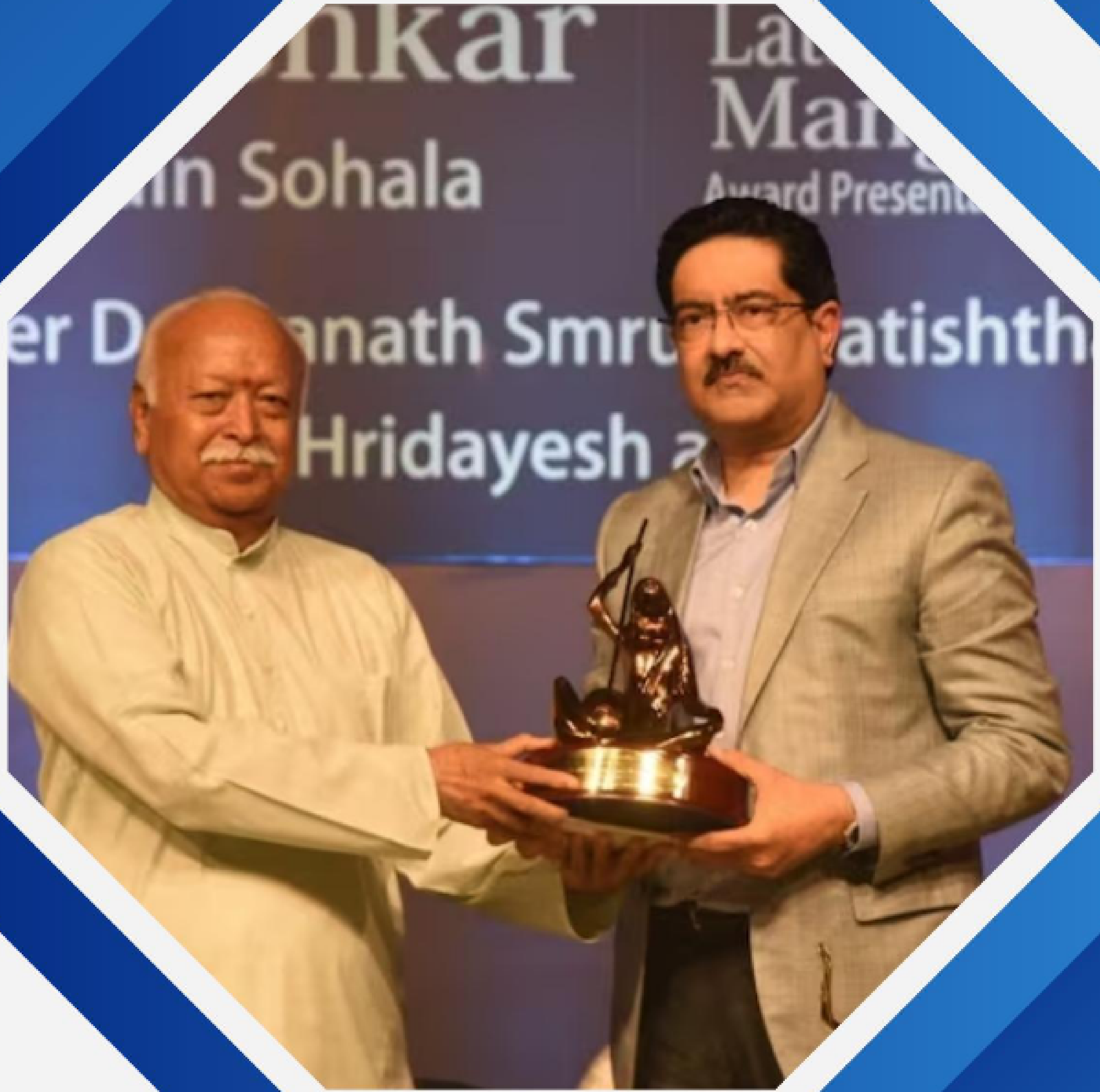

Result Mitra

DAILY CURRENT AFFAIRS

कुमार मंगलम बिरला को लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- 24 अप्रैल, 2025 को मुंबई के दीनानाथ मंगेशकर नाट्यगृह में आयोजित समारोह में आदित्य बिरला समूह के अध्यक्ष और पद्म भूषण से सम्मानित कुमार मंगलम बिरला को प्रतिष्ठित लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया।

DAILY CURRENT AFFAIRS

कुमार मंगलम बिरला को लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- यह पुरस्कार उनकी दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता और भारत के विकास में उनके योगदान के लिए प्रदान किया गया।
- यह आयोजन मास्टर दीनानाथ मंगेशकर की 83वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित किया गया, जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने पुरस्कार प्रदान किए।

नरेन्द्र मोदी 2022
आशा भोंसले - 2023
अमिताभ बच्चन - 2024

कुमार मंगलम बिरला को लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025

Result Mitra

लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार का महत्त्व

- लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार की स्थापना 2022 में मास्टर दीनानाथ मंगेशकर स्मृति प्रतिष्ठान और मंगेशकर परिवार द्वारा भारत रत्न लता मंगेशकर की स्मृति में की गई थी।
- यह पुरस्कार उन व्यक्तियों को दिया जाता है, जिन्होंने राष्ट्र, समाज और संस्कृति के लिए असाधारण योगदान दिया हो।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

कुमार मंगलम बिरला को लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025

Result Mitra

लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार का महत्त्व

- पिछले प्राप्तकर्ताओं में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (2022), आशा भोसले (2023) और अमिताभ बच्चन (2024) शामिल हैं।
- इस वर्ष कुमार मंगलम बिरला के साथ-साथ श्रद्धा कपूर, सुनील शेट्टी, सचिन पिळगांवकर, सोनाली कुलकर्णी और वायलिन वादक डॉ. एन. राजम को भी सम्मानित किया गया।

DAILY

CURRENT AFFAIRS

कुमार मंगलम बिरला को लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025

Result Mitra

कुमार मंगलम बिरला के बारे में

- 57 वर्षीय कुमार मंगलम बिरला, आदित्य बिरला समूह के अध्यक्ष, एक प्रमुख उद्योगपति हैं, जिन्होंने समूह को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया।
- 1995 में, 28 वर्ष की आयु में, उन्होंने अपने पिता आदित्य विक्रम बिरला के निधन के बाद समूह की कमान संभाली।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

कुमार मंगलम बिरला को लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025

Result Mitra

कुमार मंगलम बिरला के बारे में

- उनके नेतृत्व में समूह का वार्षिक कारोबार 1995 में 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर मार्च 2024 तक 66 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जो 40 देशों में संचालित होता है।
- बिरला ने अल्ट्राटेक सीमेंट, नोवेलिस, बिरला कार्बन और आदित्य बिरला फैशन जैसे प्रमुख व्यवसायों का विस्तार किया।

DAILY CURRENT AFFAIRS

कुमार मंगलम बिरला को लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार 2025

Result Mitra

कुमार मंगलम बिरला के बारे में

- दिसंबर 2024 तक फोर्ब्स ने उनकी संपत्ति 23.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर आंकी।
- इसके अतिरिक्त, उन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में योगदान दिया, जैसे बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (BITS) पिलानी के चांसलर के रूप में और पुणे में आदित्य बिरला मेमोरियल हॉस्पिटल की स्थापना करके।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार से संबंधित निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

(a) यह पुरस्कार मास्टर दीनानाथ मंगेशकर स्मृति प्रतिष्ठान द्वारा दिया जाता है।

(b) इसका उद्देश्य कला और संस्कृति के क्षेत्र में योगदान को मान्यता देना है।

(c) यह पुरस्कार केवल संगीतकारों को दिया जाता है।

(d) इसके पिछले प्राप्तकर्ताओं में नरेंद्र मोदी और अमिताभ बच्चन शामिल हैं।

Result Mitra

उत्तर: (c) यह पुरस्कार केवल संगीतकारों को दिया जाता है।

- व्याख्या:
- लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार कला, संस्कृति, साहित्य, रंगमंच, सिनेमा और सामाजिक क्षेत्रों में योगदान के लिए दिया जाता है, न कि केवल संगीतकारों को।
- पिछले प्राप्तकर्ताओं में नरेंद्र मोदी (2022), आशा भोसले (2023) और अमिताभ बच्चन (2024) शामिल हैं।

Result Mitra

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

UPSC Mains Paper 2

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra™

चर्चा में क्यों?

- 17 अप्रैल, 2025 को, यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को अपने ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल करने की घोषणा की, जिससे कुल जियोपार्क की संख्या 50 देशों में 229 तक पहुँच गई।

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra™

चर्चा में क्यों?

- यह घोषणा यूनेस्को के ग्लोबल जियोपार्क कार्यक्रम के 10वें वर्ष के उत्सव के साथ हुई, जो भूवैज्ञानिक विरासत के संरक्षण, सतत विकास और स्थानीय समुदायों के सशक्तीकरण को बढ़ावा देता है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- इस वर्ष, उत्तर कोरिया और सऊदी अरब ने पहली बार अपने जियोपार्क को इस नेटवर्क में शामिल करवाया, जो एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।
- हालाँकि वर्तमान में, भारत का कोई भी स्थल यूनेस्को जियोपार्क की सूची में शामिल नहीं है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

16 नए जियोपार्क: प्रमुख विशेषताएँ

- 2025 में शामिल किए गए 16 नए जियोपार्क 11 देशों—चीन, उत्तर कोरिया, इक्वाडोर, इंडोनेशिया, इटली, नॉर्वे, दक्षिण कोरिया, सऊदी अरब, स्पेन, यूनाइटेड किंगडम और वियतनाम—में फैले हुए हैं।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

16 नए जियोपार्क: प्रमुख विशेषताएँ

कुछ प्रमुख जियोपार्क इस प्रकार हैं:

उत्तर कोरिया: माउंट पैक्टु

- माउंट पैक्टु, जो उत्तर कोरिया और चीन की सीमा पर स्थित एक सक्रिय स्ट्रैटोवॉल्केनो है, उत्तर कोरिया का पहला यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क है।
- यह कोरियाई प्रायद्वीप का सबसे ऊँचा शिखर है और उत्तर कोरिया के सांस्कृतिक और पौराणिक इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

16 नए जियोपार्क: प्रमुख विशेषताएँ

सऊदी अरब: नॉर्थ रियाद और सल्मा जियोपार्क

- सऊदी अरब ने पहली बार दो जियोपार्क—नॉर्थ रियाद और सल्मा—को GGN में शामिल किया। ये जियोपार्क सऊदी अरब की भूवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विरासत को उजागर करते हैं।

DAILY CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

16 नए जियोपार्क: प्रमुख विशेषताएँ

चीन: कनबुला नेशनल जियोपार्क और युनयांग जियोपार्क

- कनबुला नेशनल जियोपार्क, किंघाई-तिब्बत पठार के उत्तर-पूर्वी किनारे पर, और युनयांग जियोपार्क, दक्षिण-पश्चिम चीन में, प्राकृतिक विरासत संरक्षण और स्थानीय सतत विकास को बढ़ावा देते हैं।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

16 नए जियोपार्क: प्रमुख विशेषताएँ

यूनाइटेड किंगडम: आइल ऑफ अर्रान

- स्कॉटलैंड का आइल ऑफ अर्रान, जिसे 'स्कॉटलैंड इन मिनिएचर' कहा जाता है, 600 मिलियन वर्षों के भूवैज्ञानिक इतिहास को दर्शाता है।
- यह जियोपार्क भू-पर्यटन, पर्यावरण जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देगा।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

16 नए जियोपार्क: प्रमुख विशेषताएँ

इंडोनेशिया: मेराटस और केबुमेन जियोपार्क ✓

2004

- दक्षिण कालिमंतन का मेराटस जियोपार्क और मध्य जावा का केबुमेन जियोपार्क इंडोनेशिया की भूवैज्ञानिक विविधता को प्रदर्शित करते हैं।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN)

- ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) की स्थापना 2004 में यूनेस्को के समर्थन से की गई थी और इसे 2015 में आधिकारिक रूप से यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क कार्यक्रम के रूप में मान्यता दी गई।
- GGN का उद्देश्य उन क्षेत्रों को मान्यता देना है, जिनकी भूवैज्ञानिक विरासत अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की हो।

GLOBAL GEOPARKS NETWORK

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN)

- ये जियोपार्क न केवल चट्टानों, पहाड़ों, ज्वालामुखियों या जीवाश्म स्थलों को संरक्षित करते हैं, बल्कि शिक्षा, सतत पर्यटन और स्थानीय समुदायों की भागीदारी को भी बढ़ावा देते हैं।
- GGN के सदस्य जियोपार्क वैश्विक सहयोग और ज्ञान साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN)

- उदाहरण के लिए, 2025 में चिली के क्यूट्रालकुरा जियोपार्क में 11वीं अंतरराष्ट्रीय GGN कॉन्फ्रेंस आयोजित होने वाली है, जहाँ 2027 की कॉन्फ्रेंस के मेजबान का चयन होगा।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

यूनेस्को के बारे में

- संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जिसकी स्थापना 16 नवंबर, 1945 को लंदन में हुई थी।
- इसका मुख्यालय पेरिस, फ्रांस में स्थित है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

यूनेस्को के बारे में

- यूनेस्को का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और संचार के माध्यम से विश्व शांति, सतत विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है।
- यह संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है, जिसमें वर्तमान में 194 सदस्य देश और 12 सहयोगी सदस्य हैं।

DAILY CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

यूनेस्को के बारे में

उद्देश्य और कार्यक्षेत्र:

- शिक्षा: गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना, जैसे 'शिक्षा 2030' ढांचा।
- विज्ञान: पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रोत्साहन।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

यूनेस्को के बारे में

उद्देश्य और कार्यक्षेत्र:

- संस्कृति: विश्व धरोहर स्थलों का संरक्षण, सांस्कृतिक विविधता और अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा।
- संचार: सूचना तक पहुँच, प्रेस स्वतंत्रता और डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देना।

DAILY CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

यूनेस्को के बारे में

प्रमुख कार्यक्रम:

- विश्व धरोहर सूची: ऐतिहासिक और प्राकृतिक स्थलों का संरक्षण, जैसे भारत के ताजमहल और काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान।
- ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN): भूवैज्ञानिक विरासत वाले क्षेत्रों को मान्यता देना।

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra™

यूनेस्को के बारे में

प्रमुख कार्यक्रम:

- मैन एंड बायोस्फीयर प्रोग्राम: जैव विविधता संरक्षण के लिए बायोस्फीयर रिजर्व की स्थापना।
- अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर: भारत की कुंभ मेला और योग जैसी परंपराओं को मान्यता।

DAILY CURRENT AFFAIRS

यूनेस्को ने 16 नए स्थलों को ग्लोबल जियोपार्क नेटवर्क (GGN) में शामिल किया

Result Mitra

भारत और यूनेस्को:

- भारत 1946 से यूनेस्को का सदस्य है।
- भारत में 42 विश्व धरोहर स्थल (34 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक, 1 मिश्रित) और 12 अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरें सूचीबद्ध हैं।
- यूनेस्को ने भारत में शिक्षा और साक्षरता कार्यक्रमों को भी समर्थन दिया है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न : निम्नलिखित जियोपार्कों (स्तंभ A) को उनके संबंधित देशों (स्तंभ B) के साथ सही ढंग से जोड़िए:

स्तंभ A (जियोपार्क)	स्तंभ B (देश)
A. माउंट पैक्टु	1. यूनाइटेड किंगडम
B. नॉर्थ रियाद	2. उत्तर कोरिया
C. आइल ऑफ अर्रान	3. सऊदी अरब
D. कनबुला नेशनल जियोपार्क	4. चीन

विकल्प:

(a) A-2, B-3, C-1, D-4
(b) A-3, B-2, C-4, D-1
(c) A-1, B-4, C-2, D-3
(d) A-4, B-1, C-3, D-2

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

उत्तर: (a) A-2, B-3, C-1, D-4

व्याख्या:

- माउंट पैक्टु (A): उत्तर कोरिया का पहला यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क, जो उत्तर कोरिया और चीन की सीमा पर स्थित है। (मिलान: 2)
- नॉर्थ रियाद (B): सऊदी अरब का जियोपार्क, जो 2025 में GGN में शामिल हुआ। (मिलान: 3)
- आइल ऑफ अर्रान (C): यूनाइटेड किंगडम (स्कॉटलैंड) का जियोपार्क, जिसे 'स्कॉटलैंड इन मिनिएचर' कहा जाता है। (मिलान: 1)
- कनबुला नेशनल जियोपार्क (D): चीन के किंघाई-तिब्बत पठार पर स्थित। (मिलान: 4)

इसलिए, सही जोड़ी है: A-2, B-3, C-1, D-4।

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

UPSC Mains Paper 2 & 3

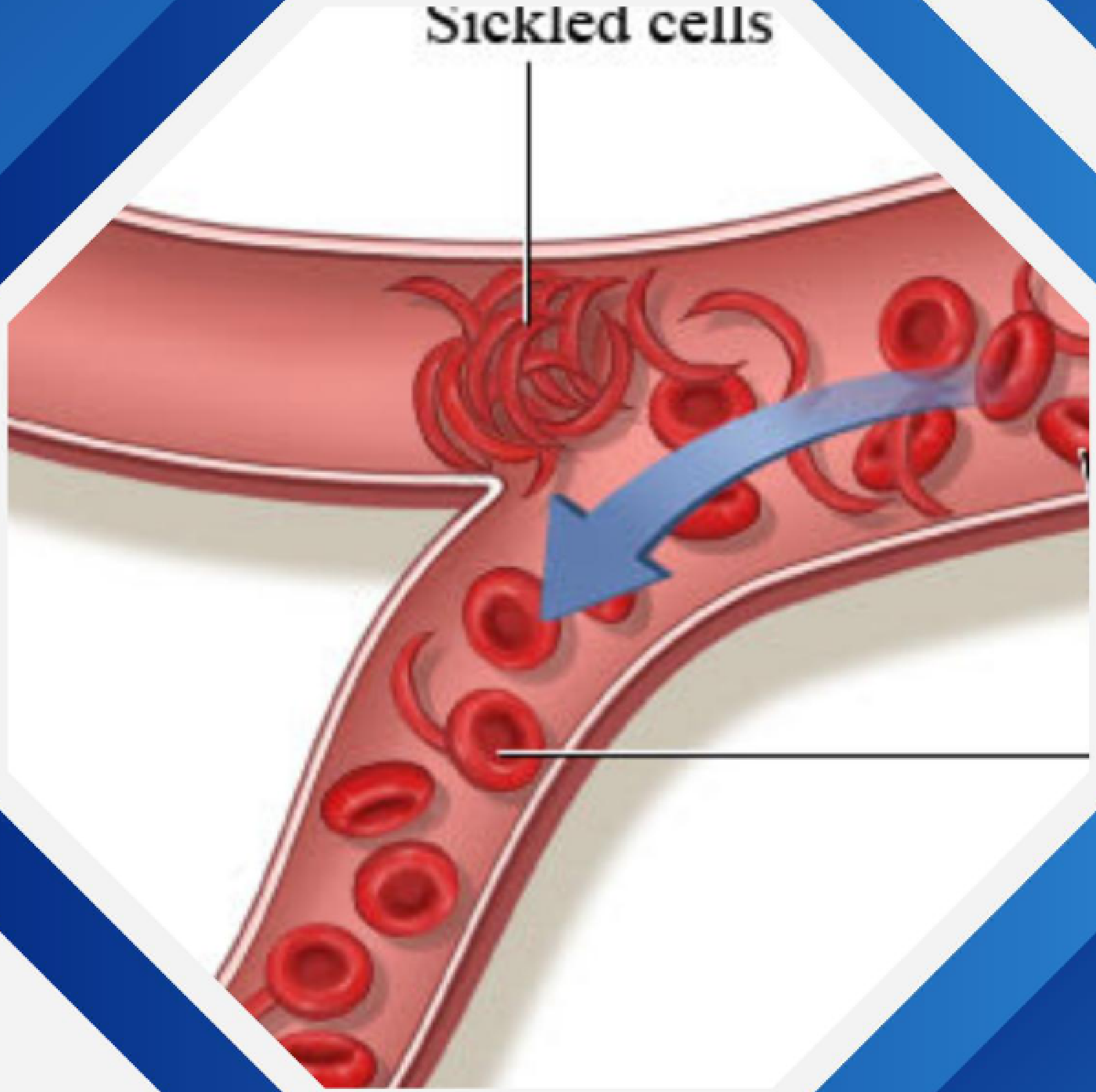

Result Mitra

DAILY
CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- 25 अप्रैल 2025 को भारत ने नेपाल को सिकिल सेल रोग और थैलेसीमिया से पीड़ित मरीजों के लिए 2 मिलियन डॉलर (लगभग 16.8 करोड़ रुपये) की चिकित्सा सहायता भेजी।
- यह सहायता भारत की "पड़ोसी प्रथम नीति" (Neighbourhood First Policy) का हिस्सा है।

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

चर्चा में क्यों?

- सहायता में दवाइयाँ और टीके शामिल हैं, जिनमें थैलेसीमिया मरीजों के लिए 17,030 टीके (इन्फ्लूएंजा, सैल्मोनेला, मेनिन्जोकोकस, हेमोफिलस इन्फ्लूएंजा, और स्ट्रेप्टोकोकस निमोनिया) की पहली खेप नेपाल को सौंपी गई।

DAILY CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

सिकिल सेल रोग के बारे में

परिचय

- सिकिल सेल रोग (Sickle Cell Disease - SCD) एक आनुवंशिक रक्त विकार है, जो लाल रक्त कोशिकाओं को हंसिया (सिकिल) आकार में बदल देता है।

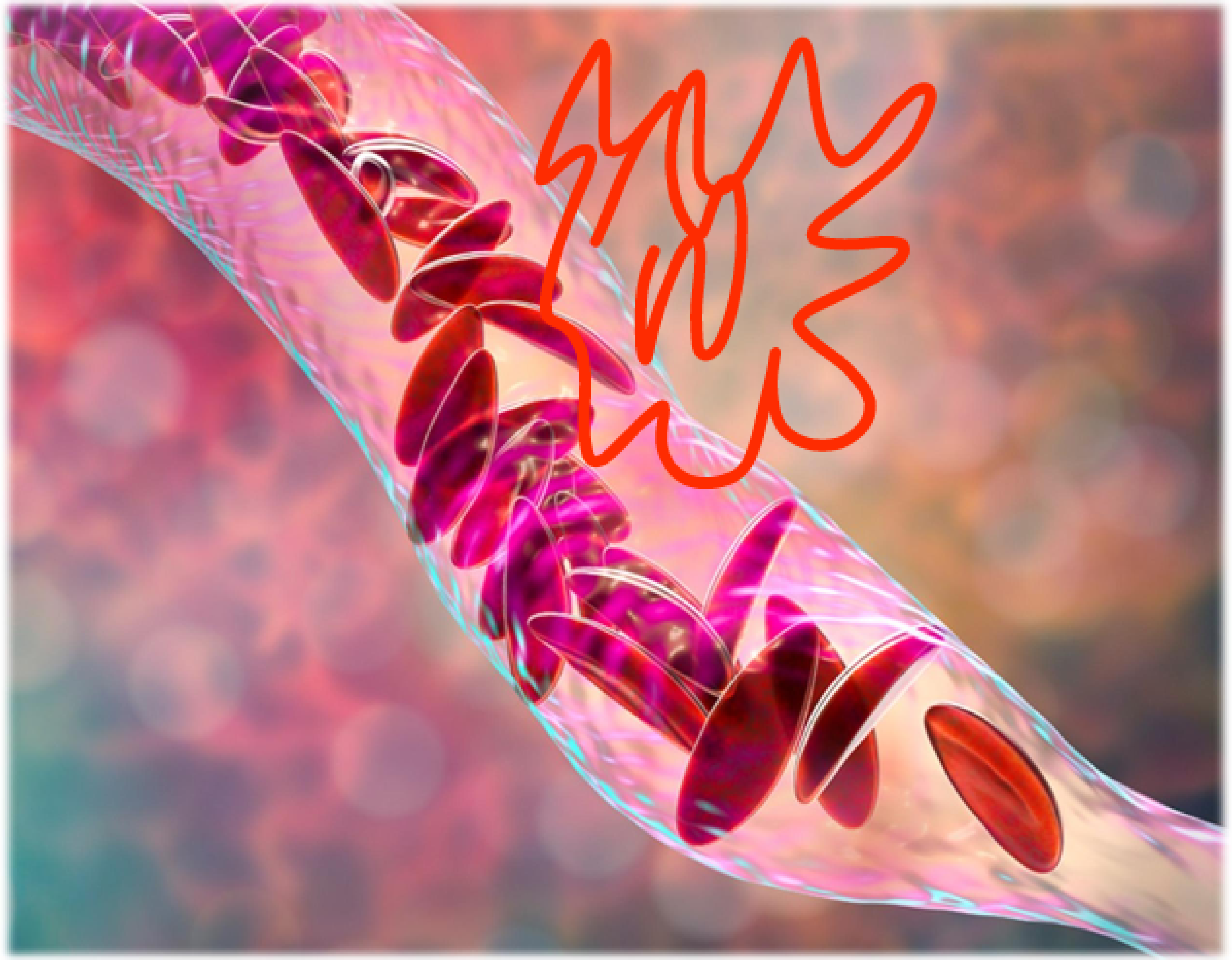

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

सिकिल सेल रोग के बारे में

परिचय

- यह रोग भारत में मुख्य रूप से आदिवासी समुदायों में प्रचलित है, जहाँ 1-40% लोग वाहक हैं।
- भारत में प्रतिवर्ष लगभग 30,000 बच्चे इस रोग के साथ पैदा होते हैं।

DAILY CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

सिकिल सेल रोग के बारे में

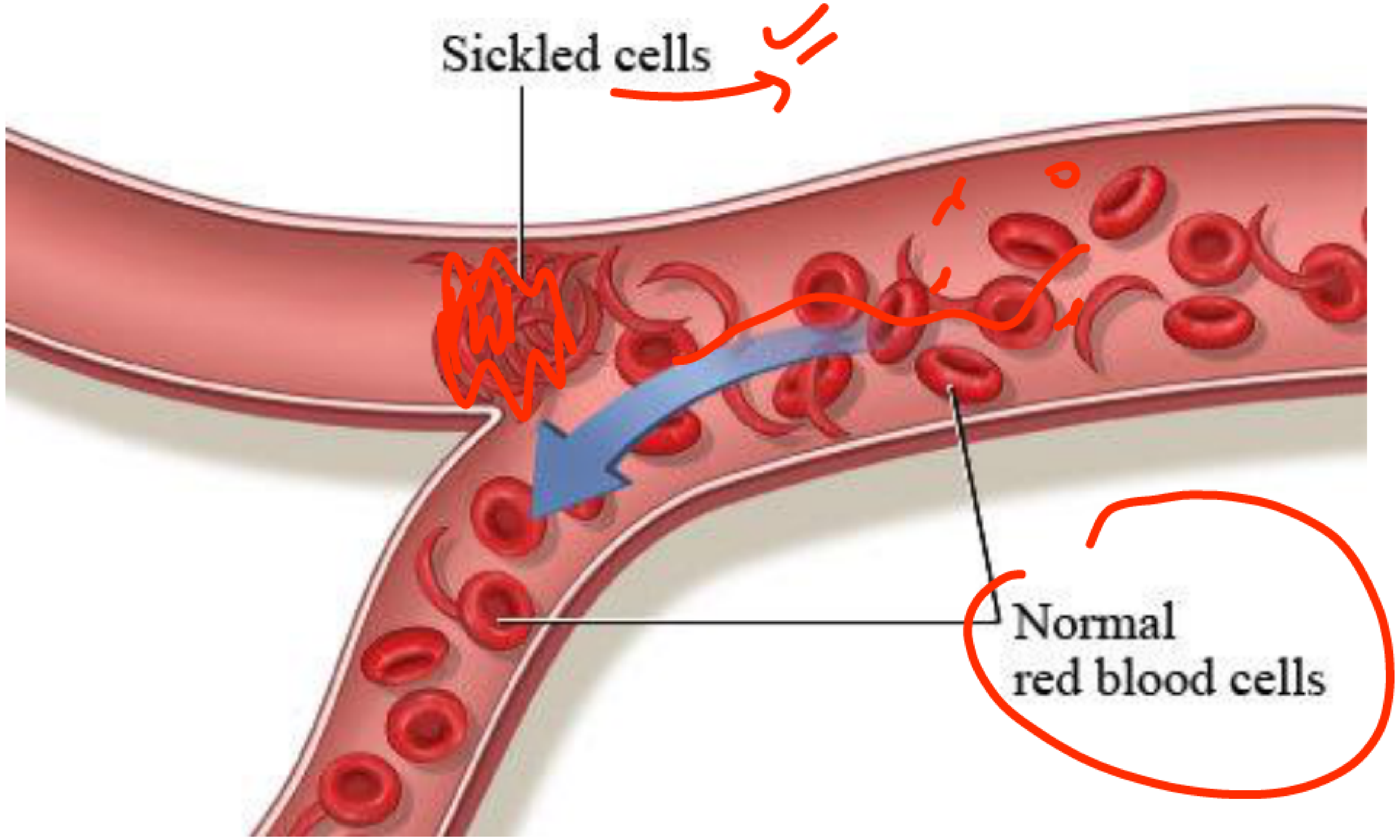

DAILY CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

सिकिल सेल रोग के बारे में

प्रभाव और लक्षण

- सिकिल सेल रोग के कारण लाल रक्त कोशिकाएँ रक्त वाहिकाओं में फंस जाती हैं, जिससे गंभीर दर्द (दर्द संकट), एनीमिया, और अंग क्षति होती है।
- यह फेफड़े, हृदय, और गुर्दे जैसे अंगों को नुकसान पहुँचाता है।
- बच्चों में मृत्यु दर अधिक है, और वयस्कों में जीवन प्रत्याशा प्रभावित होती है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

सिकिल सेल रोग के बारे में

भारत में स्थिति

- भारत में यह रोग मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, झारखंड, और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में अधिक देखा जाता है।
- यहाँ 50% मरीज 5 वर्ष की आयु से पहले मर जाते हैं।
- लगभग 20% आदिवासी आबादी प्रभावित है, और यह रोग देश में एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती है।

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

सिकिल सेल रोग के बारे में

उपचार और पहल

- उपचार में हाइड्रॉक्सीयूरिया, रक्त आधान, और बोन मैरो ट्रांसप्लांट (BMT) शामिल हैं। BMT एकमात्र स्थायी इलाज है, लेकिन यह महंगा है।
- भारत सरकार ने 2023 में सिकिल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन शुरू किया, जिसका लक्ष्य 2047 तक इस रोग को खत्म करना है। इसमें जागरूकता, स्क्रीनिंग, और उपचार पर ध्यान दिया जा रहा है।

DAILY

CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

थैलेसीमिया के बारे में

परिचय

- थैलेसीमिया एक आनुवंशिक रक्त विकार है, जिसमें हीमोग्लोबिन का उत्पादन कम या असामान्य होता है, जिससे गंभीर एनीमिया होता है।

DAILY CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

थैलेसीमिया के बारे में

परिचय

- भारत में यह रोग विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, गुजरात, पंजाब, और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में प्रचलित है।
- हर साल लगभग 10,000 बच्चे थैलेसीमिया मेजर के साथ पैदा होते हैं।

DAILY

CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

सिकिल सेल रोग के बारे में

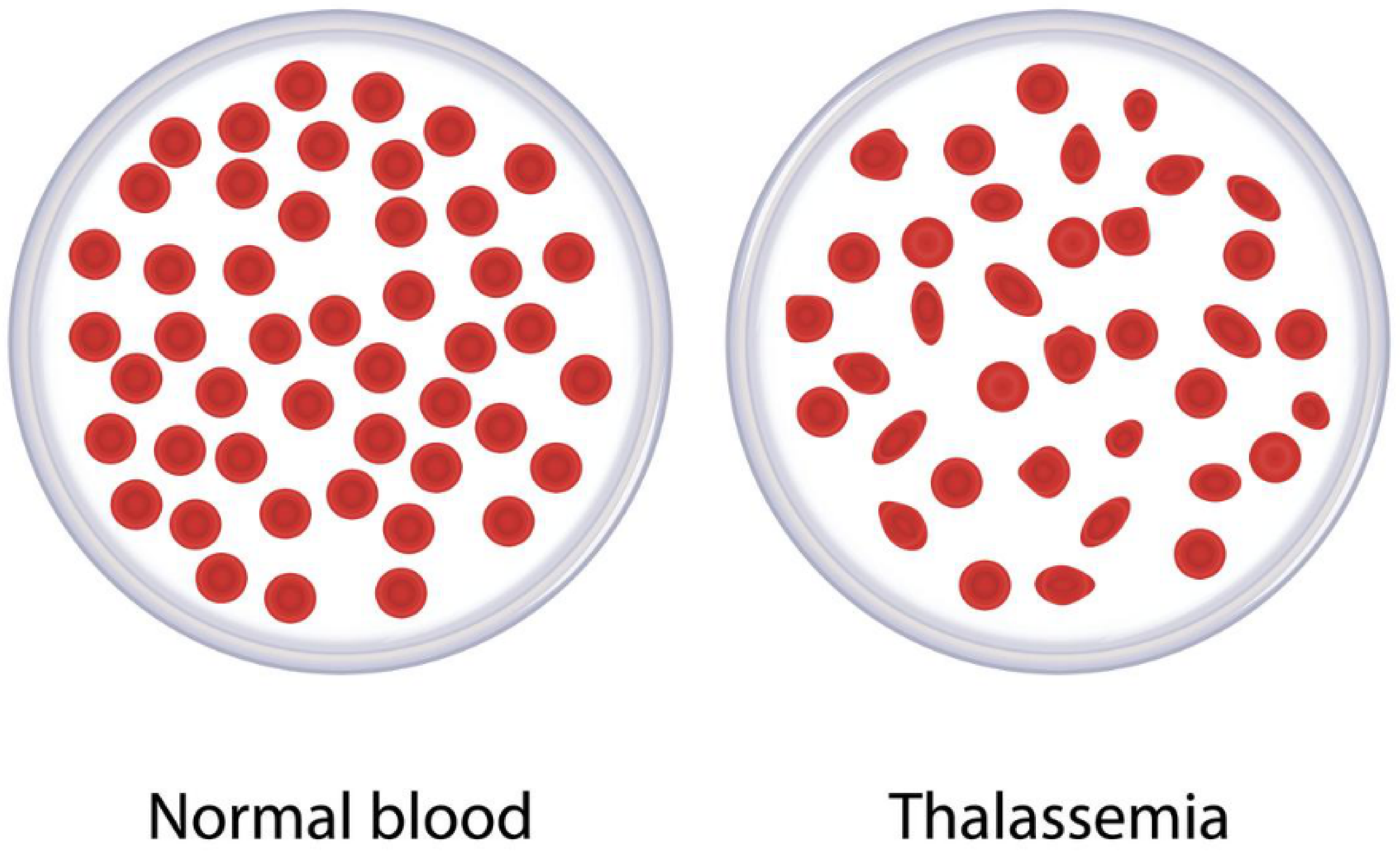

DAILY CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

थैलेसीमिया के बारे में

प्रभाव और लक्षण

- थैलेसीमिया के कारण रक्त में ऑक्सीजन ले जाने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे थकान, पीला पड़ना, और हड्डियों में असामान्यता जैसी समस्याएँ होती हैं।
- गंभीर मामलों में अंग क्षति और हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है।
- बिना उपचार के मरीजों की जीवन प्रत्याशा कम हो सकती है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

थैलेसीमिया के बारे में

भारत में स्थिति

- भारत में थैलेसीमिया वाहक की संख्या लगभग 3-4% है, और यह रोग मुख्य रूप से शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में देखा जाता है।
- लगभग 1-1.5 लाख लोग थैलेसीमिया मेजर से पीड़ित हैं।
- बच्चों में यह रोग जन्म के बाद कुछ महीनों में ही सामने आता है, और बिना इलाज के उनकी मृत्यु हो सकती है।

DAILY
CURRENT AFFAIRS

भारत ने नेपाल को सिकिल सेल और थैलेसीमिया के लिए 3 मिलियन डॉलर की मदद भेजी

Result Mitra

थैलेसीमिया के बारे में

उपचार और पहल

- उपचार में नियमित रक्त आधान और आयरन चेलेशन थेरेपी शामिल है, क्योंकि बार-बार रक्त चढ़ाने से आयरन ओवरलोड होता है।
- बोन मैरो ट्रांसप्लांट (BMT) एकमात्र स्थायी इलाज है, पर यह महंगा और HLA-मैच्ड डोनर पर निर्भर है।
- भारत सरकार ने जागरूकता अभियान और स्क्रीनिंग कार्यक्रम शुरू किए हैं, ताकि समय पर निदान और प्रबंधन संभव हो सके।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर का चयन कीजिए :

कथन 1: सिकिल सेल रोग एक आनुवंशिक रक्त विकार है, जिसमें लाल रक्त कोशिकाएँ हंसिया आकार की हो जाती हैं।

कथन 2: यह रोग भारत में मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में प्रचलित है और इसका इलाज केवल दवाओं से संभव है।

विकल्प:

A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सत्य है, और कथन 2 कथन 1 की व्याख्या करता है।

B) कथन 1 और कथन 2 दोनों सत्य है, और कथन 2 कथन 1 की व्याख्या नहीं करता है।

C) कथन 1 सत्य है, कथन 2 असत्य है।

D) कथन 1 असत्य है, कथन 2 असत्य है।

CURRENT AFFAIRS QUIZ

Result Mitra

उत्तर: C) कथन 1 सत्य है, कथन 2 असत्य है।

विश्लेषण:

- कथन 1 सही है, क्योंकि सिकिल सेल रोग आनुवंशिक है और कोशिकाएँ हंसिया आकार की हो जाती हैं।
- कथन 2 गलत है, क्योंकि यह रोग आदिवासी क्षेत्रों में प्रचलित है, और इलाज में बोन मैरो ट्रांसप्लांट भी शामिल है।

Thank You

Result Mitra™